thearyasamaj.org

RNI No. 26281/74 रजि. नं. पी.बी./जे.एल. 0011/2012-14

कृण्वन्तो ओ३म् विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

मूल्य : 2 रु.
वर्ष: 71 अंक :17
सृष्टि संवत् 1960853115
3 अगस्त 2014
दयानन्दाब्द 189
वार्षिक : 100 रू.
आजीवन : 1000 रू.
दूरभाष : 2292926, 5062726

जालन्धर

वर्ष–71, अंक : 17, 31/3 अगस्त 2014 तदनुसार 19 श्रावण सम्वत् 2071 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

ध्यानी बुद्धि से कर्म को पवित्र करते हैं

-ले० स्वामी वेदानन्द (दयानन्द) तीर्थ

जातो जायते सुदिनत्वे अह्नां समर्य आ विदथे वर्धमानः।
पुनन्ति धीरा अपसो मनीषा देवया विप्र उदियर्ति वाचम्।।
-ऋ 3/8/5

शब्दार्थ- जातः= शरीरधारी **अह्नाम्**= दिनों को **सुदिनत्वे**=सुदिन करने के निमित्त **जायते**= उत्पन्न होता है, वह **समर्ये** = जीवन-संग्राम के निमित्त तथा **विदथे**= लक्ष्य-प्राप्ति के निमित्त **आ**=सब प्रकार से **वर्धमानः**= बढ़ता है। **धीराः**= ध्यानीजन **मनीषा**= बुद्धि से **अपसः**= कर्मों को **पुनन्ति**:= पवित्र करते हैं और **विप्रः**= मेधावी ब्राह्मण **देवया**= दिव्य कामना से **वाचम्**= वाणी को **उत्+इयर्ति**= उच्चारण करता है।

व्याख्या- पूर्वार्द्ध में मनुष्य-जीवन का प्रयोजन सुन्दर काव्यमयी-भाषा में वर्णित किया गया है। मनुष्य का जन्म दिनों को सुदिन बनाने, संवारने के लिये होता है। पशु आदि योनि में भगवान के आराधन-साधन न थे, अतः जन्म सफल न कर सका, दिनों को सुदिन न बना सका, वे वैसे ही चले गये। अब उत्तम मानव-तन मिला, जहां जीव को उन्नति के सभी साधन प्राप्त है। अब भी यह यत्न न करें, तब कब करेगा?

यह जीवन ऐसा-वैसा नहीं है। यह समर्य=संग्राम है। बहुतों को इकट्ठा होकर लड़ना पड़ता है। बिना युद्ध के जीवन सुजीवन, दिन सुदिन नहीं होंगे। दुर्योधन ने झूठ नहीं कहा था, **सूच्यग्रं नैव दास्यामि विना युद्धेन केशव**= युद्ध के बिना सूई के अग्रभाग-समान भूमि भी न दूंगा। जो आलसी बन कर जीवन-सुख लेना चाहते हैं, वे धोखे में हैं। (यह श्लोकार्द्ध बहुत प्रसिद्ध है, परन्तु सम्पूर्ण महाभारत में कहीं नहीं है। महाभारत में इसी अभिप्राय का श्लोक निम्न है: **यावद्धि तीक्ष्णया सूच्या विध्येदग्रेण केशव। तावद्प्य परित्याज्यं भूमेर्नः पाण्डवान प्रति।।**)

न ऋते श्रान्तस्य सख्याय देवाः -ऋ.4/33/11

परिश्रम के बिना दैवी शक्तियां भी मित्र नहीं बनतीं।

नैव श्रमो न विश्रमः- थकान नहीं, अतः विश्राम नहीं। परिश्रम नहीं, आराम नहीं।

इसी भाव को लेकर कहा- **समर्य आ विदथे वर्धमानः**। उत्पत्ति मात्र से कुछ नहीं होता, जब तक पुरुषार्थ, अध्यवसाय, यत्न न किया जाये, जीवन चल ही नहीं सकता, सुजीवन-सुदिन तो दूर की बात है। चेष्टा में, यत्न में जीवन है, वृद्धि है। देखिए जो बच्चा निश्चेष्ट पड़ा रहता है उसकी बाढ़ रूक जाती है, वह अपाहित हो जाता है। स्वस्थ बच्चा पड़ा पड़ा भी हाथ पैर हिलाता रहता है। यही हाथ-पैर आदि का हिलाना-चलाना उसकी वृद्धि का कारण होता है। इसीलिये यहां विदर्थ लक्ष्य प्राप्ति से समर्य-संग्राम का ग्रहण किया।

बढ़ने का प्रयोजन है लड़ना, पुरुषार्थ करना, संघर्ष तथा प्राप्ति। यदि प्राप्ति कुछ नहीं और केवल लड़ते ही रहे, सारा जीवन संग्राम में बीत गया तो व्यर्थ गया, अतः अंधे होकर नहीं लड़ना चाहिये। लड़ना लड़ने के लिये नहीं है। लड़ना साधन है, साध्य नहीं, अतः वेद कहता है:-

पुनन्ति धीरा अपसो मनीषा- बुद्धिमान मनन शक्ति से, विचार शक्ति से, कर्मों को पवित्र करते हैं। ज्ञान बड़ा शोधक है-

ज्ञानाग्निः सर्वकर्माणि भस्मसात्कुरुते तथा। -गीता 4/37

ज्ञानरूपी अग्नि सब कर्मों को भस्म कर देता है, अर्थात् कर्मों के दोषों को ज्ञान दूर करता है, अतः वेद में कहा है-

साधघृतेन धियं दधामि।। -ऋ. 7/34/8

मैं ऋतयुक्त साधना करता हुआ ऋतयुक्त बुद्धि को धारण करता हूं, अर्थात् कर्म के साथ बुद्धि को, ज्ञान को भी धारण करता हूं। ज्ञानयुक्त कर्म करने वाले विद्वान् को विप्र कहते हैं, ऐसा विप्र व्यर्थ नहीं बोलता। जब वह बोलता है सारयुक्त वचन बोलता है, अतः वेद कहता है- **देवया विप्र उदियर्ति वाचम्** विप्र देवविषयक वाणी बोलता है।

ब्राह्मणग्रंथों में आता है कि यज्ञ में मानुषी वाणी न बोले, वैष्णवी या दैवी वाणी बोले। इसके दो तात्पर्य हैं, एक तो यह कि यज्ञ में दैवी परमात्मा की वेदवाणी का प्रयोग करे। दूसरा यह कि यह दैवी वाणी= दिव्य भावयुक्त वाणी बोले, न कि आसुरी वाणी।

मनुष्य-जीवन की सफलता देव बनने में हैं। देव बने बिना दैवी वाणी कैसे बोल सकेगा? देव बनने का साधन है ऋतानुसार अनुष्ठान। वह अनुष्ठान अनृत-त्याग के बिना सर्वथा असंभव है। यज्ञ करने के लिये तत्पर यजमान दीक्षा लेते हुये कहता है-

इदमहमनृतात् सत्यमुपैमि। -य.1/5

मैं अनृत का त्याग करके सत्य ग्रहण करता हूं। ऋत का एक अर्थ यज्ञ है। यजमान प्रतिज्ञा करता है कि मैं यज्ञ विरोधी भावों का त्याग करता हूं। ब्राह्मणग्रंथों तथा वेदों में यह बात अनेक बार कही गई है कि देव यज्ञ करते हैं।

इदमहमनृतात् सत्यमुपैमि- पर शतपथ ब्राह्मण में लिखा है कि इसका अनुष्ठान करने वाला **मनुष्येभ्यो देवानुपैति**= मनुष्यों से ऊपर उठ कर देवत्व को प्राप्त करता है। वहीं यह भी लिखा है-

सत्यं वै देवा अनृतं मनुष्याः।

देव सत्य-स्वरूप होते हैं, मनुष्य अनृत अर्थात् मनुष्य अनेक बार ऋतविरोधी कर्म करता है, किन्तु देवों के आचरण में अनृत=असत्य का लवलेश भी नहीं होता। उनका जीवन-व्यवहार सत्य से ओत-प्रोत रहता है। मानव-जीवन का लक्ष्य देव=जीवन है। उनके लिये अनृतत्यागपूर्वक सत्यग्रहण, सत्यधारण, अनिवार्य है। उसके बिना देवतत्व संभव नहीं है।

-स्वाध्याय संदोह से साभार

thearyasamaj.org

श्रावणीः विद्याकाल का स्मारक पर्व

-ले० श्री सुरेश शास्त्री सभा कार्यालय जालन्धर

अष्टाध्यायी महाभाष्य के रचयिता महामुनि पतञ्जलि अपने ग्रन्थ में विद्योपयोग के चार भेद बतातें हुए लिखते हैं-

चतुर्भिश्च प्रकारैः विद्या उपयुक्ता भवति-आगमकालेन स्वाध्यायकालेन प्रवचनकालेन व्यवहारकालेन।

अर्थात् ज्ञान की निम्न चार विधाओं के आश्रय से ही उसकी उपयोगिता सार्थकता एवं परिपूर्णता सम्भव है। ज्ञान का प्रथम काल आगमकाल कहलाता है। इसमें मनुष्य गुरू के समीप जाकर विधिपूर्वक विद्या को ग्रहण करता है। ज्ञानी जन से सत्-ज्ञान का नियमपूर्वक ग्रहण किए बिना विद्या के अगले कालों में प्रवेश असम्भव है।

दूसरा काल स्वाध्याय काल है। इसमें गुरूजनों द्वारा दिए ज्ञान को स्वतः चिन्तन मनन द्वारा विकसित कर अन्तरात्मा में आत्मसात् किया जाता है। विद्या का तीसरा काल प्रवचन काल के नाम से प्रसिद्ध है। इसमें गुरू द्वारा प्रदत्त ज्ञान को अपने चिन्तन मनन द्वारा परिमार्जित एवं पुष्ट करके लोक में जन सामान्य के मध्य में प्रचार एवं प्रसार की व्यवस्था की जाती है। यही प्रवचन काल है। प्रवचन से विद्या की वृद्धि तथा अविद्या का ह्रास होता है। जनता का कल्याण एवं प्रवक्ता का अभ्युदय होता है।

आजकल हमारे समाज में जन जागरण की अत्यन्त आवश्यकता है। राष्ट्र में चारों ओर अविद्या का अन्धकार फैला हुआ है। चारों ओर विभिन्न मत-मतान्तरों एवं अनेक प्रकार के पाखण्ड़ों का जाल फैलता जा रहा है। ऐसे समय में हमें स्वामी दयानन्द के सन्देश को घर-घर पहुंचाने की आवश्यकता है। वेदों की पवित्र ऋचाओं का सन्देश विश्व को देना है। यह सब प्रचार एवं प्रवचन से ही सम्भव है।

श्रावणी का पर्व हमें अपने स्वाध्याय एवं विद्याप्राप्ति की याद दिलाता है। परन्तु दोष तो यह है कि हमारा आगम काल ही ठीक नहीं है तो फिर आगे आने वाले काल कैसे ठीक होंगे। हमारे विद्यार्थियों को यदि आगम काल में ही सत्य विद्या का उपदेश देकर शिक्षित बनाया जाए तो वे निश्चित ही अपने अगले दोनों काल भी स्वयमेव ठीक कर लेंगे। विद्यारम्भ के समय में विद्यार्थियों को गुणवान, धार्मिक तथा अच्छे संस्कारों से युक्त शिक्षा प्रदान करनी चाहिए जिससे वे श्रेष्ठ गुणों से युक्त, संस्कारवान, आज्ञापालक बन सके। आज नैतिक शिक्षा के अभाव में बच्चों के अन्दर अच्छे गुणों का अभाव है। आज जो भी बुराईयां, अत्याचार, अनाचार आदि बढ़ रहे हैं उन सभी के पीछे अच्छे गुणों का अभाव, अच्छी शिक्षा का अभाव मूल कारण है। आज बच्चों को इस प्रकार की शिक्षा प्रदान की जाती है जिससे वे अच्छी नौकरी, अच्छा पद प्राप्त करके ऐशो आराम का जीवन व्यतीत कर सके। ऐसी शिक्षा प्राप्त करके वे अच्छे पद को प्राप्त तो कर लेते हैं, सुख के साधनों को भी प्राप्त कर लेते हैं परन्तु अच्छे गुणों के अभाव के कारण, अच्छी गुणों से युक्त शिक्षा के अभाव में वे माता-पिता के प्रति, समाज व राष्ट्र के प्रति अपने उत्तरदायित्व का निर्वहन नहीं कर पाते और उस धन को विषय भोगों में तथा बुरे कार्यों में नष्ट कर देते हैं।

स्वाध्याय प्रवचनाभ्यां न प्रमदितव्यम् यह उपदेश हमें बार-बार दिया जाता है। श्रावणी पर्व इस उपदेश का ही स्मारक पर्व है। वेद ज्ञान के निरन्तर प्रवचन से ही इस विश्व का कल्याण है। ऋग्वेद का एक मन्त्र है-

अग्निर्धिया स चेतति केतुर्यज्ञस्य पूर्व्यः।
अर्थं ह्यस्य तरणि।।

अर्थात् सबकी उन्नति करने वाला वह परमात्मा ध्यान से ही चिताया जाता है। वह संसार यज्ञ का पूर्व से ही वर्तमान केतु है। इसकी प्राप्ति या वेदार्थज्ञान वास्तव में संसार सागर से तरणि अर्थात् तारक है। इस प्रकार स्पष्ट है कि वेद का ज्ञान संसार के लिए अमृत के समान लाभदायक एवं सुखप्रद है। अतएव हमें इस अवसर पर यह प्रतिज्ञा करनी चाहिए कि हम अपने स्वाध्याय काल में वृद्धि करेंगे। इसके द्वारा अपने ज्ञान का सर्वांगीण विकास करेंगे तथा वेदों के सन्देश को विश्व के कोने-कोने में अपने प्रवचन काल द्वारा विस्तृत करेंगे तभी इस पुनीत पर्व की सार्थकता हो सकती है।

विद्या के चौथे काल को महर्षि पतञ्जलि ने व्यवहार काल बताया है। यह अत्यन्त महत्त्वपूर्ण काल है। वास्तव में विद्या की वास्तविक उपयोगिता एवं सार्थकता यहीं निर्भर है। यही चरम स्थिति है, जीवन का अन्तिम लक्ष्य है। मनुष्य चाहे कितना ही ज्ञान प्राप्त कर ले, किन्तु जब तक उसे अपने व्यक्तिगत व्यवहार में लाकर नहीं अपनाते तब तक हमारे पूर्वोक्त तीनों कालों का ज्ञान अधूरा एवं अपूर्ण है। इसके बिना वास्तव में हमारा जीवन ही अपूर्ण है। संस्कृत में एक कहावत है-

शास्त्राण्याधीत्यापि भवन्ति मूर्खाः। यस्तु क्रियावान् पुरूषः सः विद्वान्।।

अर्थात् शास्त्रों का ज्ञान प्राप्त करके भी व्यक्ति तब तक मूर्ख ही है, जब तक वह उसे अपनी क्रिया द्वारा आचरण में नहीं अपना लेवे। ज्ञान द्वारा आचरण करने वाला व्यक्ति ही वास्तव में ज्ञानी और पंडित है। इसलिए हमें अपना आचरण भी पवित्र वेदानुसार बनाना पड़ेगा-

आचारहीनं न पुनन्ति वेदाः अर्थात् ज्ञान से युक्त रहने पर भी सदाचरण से रहित मनुष्य को वेद भी पवित्र नहीं कर सकते। अतः हमें विद्या की वास्तविक उपयोगिता व्यवहार काल में ही दिखानी पड़ती है। यही मानव जीवन का परम लक्ष्य है कि वह भद्र उपदेशों को ग्रहण करे, उसका चिन्तन एवं मनन करें, उसे अपने जीवन में व्यवहार में अपनाए तथा दूसरों को भी उसकी शिक्षा दें। उसके आचरण और व्यवहार को देखकर दूसरे भी उसे शीघ्र अपनाएंगे और वेद ज्ञान की ज्योति धीरे-धीरे फैलती जाएगी। यही श्रावणी का पवित्रतम सन्देश है। इसे हमें गम्भीरतापूर्वक चिन्तन और मनन करके आगे बढाना है।

अपील

समस्त ऋषि भक्तों से विनम्र प्रार्थना है कि टंकारा में रोटी बनाने की मशीन जो कि विशेषकर ब्रह्मचारियों को अधिक सुविधाजनक गर्म रोटी प्राप्त हो सके, को ध्यान में रखते हुए ही लगाई गई है। लगभग पूरे भारत से अपने-अपने घरों से और विशेषकर माँ के वात्सल्य से दूर घर की सुख सुविधाओं जैसे वातावरण हमारे ब्रह्मचारियों को गुरुकुल में भी प्राप्त हो। इस कारण से इस मशीन का महत्व ज्यादा है।

हम समस्त उन दानी माताओं को विनम्र प्रार्थना करना चाहते हैं कि इस मध्य में ब्रह्मचारियों पर ममतामय आशीर्वाद देते हुए सहयोग राशि अवश्य भेजें। जो एक बार में पूर्ण 2, 50,000/- रूपया देंगे उनका नाम मशीन पर अंकित करवाया जाएगा।

आप इस पुण्य कार्य के लिए राशि श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, के नाम केवल खाते में या आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 के पते पर भिजवाकर कृतार्थ करें।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।

सत्यानन्द मुंजाल (मैनेजिंग ट्रस्टी/प्रधान) **शिवराजवती आर्या** (उप-प्रधाना) **रामनाथ सहगल** (मन्त्री)

thearyasamaj.org

सम्पादकीय.....

श्रावणी स्वाध्याय और चिन्तन का पर्व

भारतीय जनजीवन में तथा वैदिक संस्कृति में पर्वों का विशेष महत्व है। श्रावणी का पर्व ज्ञानार्जन करने का पर्व है। प्राचीन काल में अध्येता इस पर्व पर प्रचुर ज्ञानार्जन करके अपने आपको तैयार करते थे क्योंकि ज्ञानार्जन की कोई सीमा नहीं होती है। सतत् और शाश्वत अध्ययन ही जीवन की गरिमा है। अतः श्रावणी के पावन पर्व से ही आर्य जगत् का वेद प्रचार सप्ताह आरम्भ होता है जो भाद्र कृष्ण की अष्टमी तिथि तक चलता है। भाद्र कृष्ण पक्ष की अष्टमी भी भारतीय जीवन में अतिशय पुण्य की तिथि है क्योंकि इस दिन वैदिक संस्कृति के परम उद्धारक परम योगीराज और द्वापर युग के निःस्पृह राजनीतिज्ञ श्री कृष्ण का जन्म हुआ था। इन दो पुण्य तिथियों के मध्य हमारा वेद प्रचार सप्ताह मनाया जाता है जो स्वाध्याय और चिन्तन का प्रतीक है।

वैदिक धर्म में स्वाध्याय को सर्वोपरि स्थान दिया गया है। वैदिक संस्कृति में मनुष्य जीवन को चार भागों में बांटा गया है। ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और सन्यास। स्वाध्याय को हमारी संस्कृति में इतना महत्व दिया गया है कि यह प्रत्येक वर्ण और आश्रम के लिए अनिवार्य और आवश्यक है। आश्रमों में प्रथम आश्रम ब्रह्मचर्य है। ब्रह्मचर्य आश्रम केवल गुरूओं के सान्निध्य में रहकर स्वाध्याय के लिए है। जब विद्या पूरी हो जाती है तो समावर्तन के समय स्नातक को आचार्य शिक्षा देता है कि- **स्वाध्यायान्मा प्रमदः। स्वाध्याय प्रवचनाभ्याम् न प्रमदितव्यम्** अर्थात् जिसका स्पष्ट प्रयोजन यही है कि आगे चलकर गृहस्थाश्रम में भी स्वाध्याय करते रहो और उसमें कभी प्रमाद न करो। गृहस्थ के पश्चात वानप्रस्थी का भी प्रधान कर्म स्वाध्याय और तप ही रह जाता है। सन्यासी का समय भी परम तत्त्व चिन्तन और उपदेश के अंगीभूत स्वाध्याय में ही व्यतीत होता है। सन्यासी के लिए आज्ञा है कि **-संन्यसेत्सर्वकर्माणि वेदमेकन्न संन्यसेत्।** अर्थात् सन्यासी सभी कर्मों को त्याग दे परन्तु वेद का त्याग न करे। हमारे ऋषियों-मुनियों के द्वारा स्वाध्याय को इतना महत्त्व देने का उद्देश्य यही है कि जिस प्रकार शरीर की स्थिति और उन्नति मन से होती है उसी प्रकार मनुष्य की आत्मिक उन्नति भी स्वाध्याय के द्वारा होती है। आत्मिक उन्नति के बिना मनुष्य जीवन के लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर सकता। जिस मनुष्य की केवल शारीरिक उन्नति हुई है वह मनुष्य आचरण में पशु के समान होता है। स्वाध्याय के द्वारा मनुष्य का व्यक्तित्व निखर कर सामने आता है।

वेद प्रचार आर्य समाज का मेरू दण्ड है। यही आधारशिला है जिस पर हमारा संगठन आधारित है। अतः इस समय में आर्य समाजों के द्वारा वेद प्रचार सप्ताह का आयोजन किया जाता है। इस आयोजन के द्वारा जन साधारण को जागृत करना चाहिए। स्वाध्याय की वृत्ति लोगों के अन्दर पैदा करने की आवश्यकता है। इसके लिए आर्य समाजों को वैदिक साहित्य लोगों में बांटकर उन्हें स्वाध्याय के प्रति जागरूक करना है। वैदिक काल में वेदों के पठन-पाठन का विशेष प्रचार था और लोग नित्य ही वेद प्रचार में रत रहते थे तथा वर्षा ऋतु में वेद के पारायण का विशेष आयोजन किया जाता था। इसका कारण यह था कि भारतवर्ष वर्षा बहुल तथा कृषि प्रधान देश है। यहां की जनता आषाढ़ और श्रावण में कृषि के कार्यों में विशेषतः व्यस्त रहती है। श्रावणी फसल की जुताई और बुआई आषाढ़ से प्रारम्भ होकर श्रावण के अन्त तक समाप्त हो जाती है। इस समय श्रावण पूर्णिमा पर ग्रामीण जनता कृषि के कार्यों से निवृत्ति पाकर तथा आने वाली फसल के आगमन से आशान्वित हो जाती है। क्षत्रिय वर्ग भी इस समय दिग्विजय यात्रा से विरत हो जाता है। वैश्य भी व्यापार, यात्रा आदि कार्यों से विश्राम पाते हैं। इसलिए जनता इस दीर्घ अवकाश काल में वेद पारायण यज्ञों तथा प्रवचन में प्रवृत्त होती थी। वर्षा ऋतु में ऋषि-मुनि और सन्यासी महात्मा भी वर्षा के कारण वनस्थली और जंगलों को छोड़कर ग्रामों के निकट आकर रहने लगते थे और वहीं वेद पठन, धर्मोपदेश और ज्ञानचर्चा में अपना चातुर्मास बिताते थे। श्रद्धालु, श्रोता और वेदाध्ययन करने वाले लोग ज्ञान श्रवण और वेदपाठ से अपने समय को सफल बनाते थे और ऋषियों के इस प्रिय कार्य से उनका तर्पण मानते थे।

श्रावणी आर्यों के प्रसिद्ध पर्वों में एक महान् पर्व है। यह पर्व वैदिक पर्व है और इस पर्व का सीधा सम्बन्ध वेद के अध्ययन और अध्यापन से है। इसी आधार को लेकर आर्य समाज ने वेद सप्ताह का आयोजन इस अवसर पर किया। वेद के अध्ययन के मार्ग को आचार्य महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने प्रशस्त किया है। अतः उनके द्वारा स्थापित वेद प्रचारक आर्य समाज का कर्त्तव्य है कि वह वेद प्रचार के कार्य को आगे बढ़ाए। स्वाध्याय मनुष्य जीवन का अंग होना चाहिए। ऐसे अवसरों से प्रेरणा पाकर ही यदि हम इस प्रवृत्ति को आगे बढ़ाएं तो अच्छा हो। आर्यों के जीवन का स्वाध्याय एक अंग है। स्वाध्याय में प्रमाद का हमारे शास्त्रों में निषेध है। स्वाध्याय का ज्ञान के परिवर्धन में बहुत बडा महत्व है। शतपथ ब्राह्मण में स्वाध्याय की प्रशंसा करते हुए लिखा गया है कि स्वाध्याय करने वाला सुख की नींद सोता है, अपना परम चिकित्सक होता है, उसमें इन्द्रियों का संयम और एकाग्रता आती है और प्रजा की अभिवृद्धि होती है।

श्रावणी पर्व के साथ नए यज्ञोपवीत धारण करने और पुराने के छोड़ने की प्रथा भी जुड़ी हुई है। गुरूकुलों में इसी दिन नए ब्रह्मचारियों का उपनयन संस्कार किया जाता है। इसके साथ ही श्रावणी नक्षत्र से युक्त इस पूर्णिमा को रक्षा बन्धन के रूप में भी मनाया जाता है। यह प्रथा कब से शुरू हुई इसका कोई निश्चित समय तो मालूम नहीं होता परन्तु इसकी भावना अच्छी है। रक्षा बन्धन अर्थात् रक्षा के लिए बन्धन। बहनें भाईयों की कलाई पर रक्षा का बन्धन बांध कर उनसे आशा करती हैं कि वह मुसीबत के समय में उनकी रक्षा करें। इस पवित्र संकल्प के साथ अगर इस पर्व को मनाया जाए तो कोई हानि नहीं है।

अतः हम प्रयास करें कि यह सप्ताह पूर्ण गौरव और गरिमा के साथ मनाएं। स्वाध्याय और चिन्तन का व्रत लें तथा सात्विक भाव से जीवन यापन करके व्यक्तिगत रूप से अध्ययन और चिन्तन पर बल दें।आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब से सम्बन्धित सभी आर्य समाजों से निवेदन है कि वे इन दिनों में अपनी-अपनी आर्य समाजों में वेद प्रचार सप्ताह का आयोजन करके वेद प्रचार के कार्य को आगे बढ़ाए क्योंकि संसार का उपकार करना आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य है। इस महान् उद्देश्य को पूरा करने के लिए हमें वेद के पवित्र ज्ञान का प्रचार करना होगा। वेद का ज्ञान सूर्य के प्रकाश के समान है। जिस प्रकार सूर्य की किरणों से अन्धकार दूर होता है उसी प्रकार वेद रूपी सूर्य के ज्ञान की किरणों से अज्ञान रूपी अन्धकार, कुरीतियां तथा बुराईयों का नाश होता है। इसलिए सभी आर्य समाजें इस श्रावणी पर्व को अवश्य मनाएं।

-प्रेम भारद्वाज संपादक एवं सभा महामन्त्री

thearyasamaj.org

महर्षि का वास्तविक जीवन दर्शन

-ले० खुशहाल चन्द्र आर्य गोविन्द राम आर्य एण्ड सन्ज 180 महात्मा गांधी रोड, कोलकाता

यह लेख मैंने आदरणीय डॉ. महेश जी विद्यालंकार द्वारा लिखित ''ऋषि दयानन्द की अमर गाथा'' शीर्षक पुस्तक से उद्घृत किया है। इस पुस्तक में महेश जी ने महर्षि के गुण, कर्म स्वभाव पर इतनी सुन्दर विवेचना की है, जिसको पढ़ कर अति प्रसन्नता तो होती ही है, साथ ही महर्षि के व्यक्तित्य व कृतित्व की भी पूरी जानकारी हो जाती है। इस पुस्तक को पढ़कर आर्य-समाजी तो अति हर्षित होता ही है, यदि इसको कोई विरोधी विचार रखने वाला व्यक्ति भी पढ़ लेवे तो वह इतना अधिक आकर्षित होता कि वह बार-बार इस पुस्तक को पढ़ने की इच्छा करेगा। यह पुस्तक केवल 25 पृष्ठों की है, मेरी इच्छा होती है कि यह पूरी पुस्तक ही पाँच-छः लेखों में उद्घृत कर दूँ, पर दो-तीन लेख तो मैं अवश्य ही लिखूगाँ जिससे सुधि-पाठक गण इसकी सरसता का आनन्द उठा सकें। प्रथम लेख इसी भांति हैं:-

सदियों के बाद इस धरती को ऋषि दयानन्द के रूप में ऐसा महापुरुष मिला, जिसने जीवन तो उनसठ वर्ष का प्राप्त किया, परन्तु कार्यकाल का जीवन केवल २० वर्ष का ही रहा, इतने अल्प समय में ही उन्होंने अपने व्यक्तित्व और कृतित्व के आलोक में संसार को चमत्कृत कर दिया। सोई हुई मानव जाति को जीवन जीने का सच्चा, सीधा तथा सरल मार्ग दिखा गया। प्रत्येक क्षेत्र में, ऋषि ने वेदसम्मत, सत्य, वैज्ञानिक, व्यवहारिक तथा उपयोगी मार्ग दर्शन दिया। उनका संकल्प था-''ऋतं वदिष्यामि, सत्यं वदिष्यामि'' इस व्रत को उन्होंने जीवन भर निभाया। उन्होंने ''सत्यमेव जयते'' अन्त में सत्य की ही विजय होती है, इस वाक्य को जीवित रखा। उन्होंने सत्य की रक्षा के लिये जहर, ईट, पत्थर, गालियाँ न जाने क्या-क्या जुल्म नहीं सहे, मगर सत्यपथ से कभी विचलित नहीं हुए। प्रायः लोक धारा के साथ बहते हैं, परन्तु ऋषि ने धारा के विपरीत चलने का मानो प्रण कर रखा था। देश, धर्म और समाज की परिस्थितियाँ ही कुछ ऐसी थी, जिसमें गलत बातों से समझौता करके चलने से काम बनने वाला नहीं था। इसलिये ऋषि का सम्पूर्ण जीवन मुसीबतों कष्टों, बाधाओं और विपरीत परिस्थितियों में निकला। मगर स्वामी जी कभी निराश, हताश और दुःखी नहीं हुए। सच है कि :-

सदियों तक इतिहास न समझ सकेगा।
तुम मानव थे या मानवता का महाकाव्य।।

ऋषि का व्यक्तित्व एवं कृतित्व चुम्बकीय था। जो भी उनके सम्पर्क में आया, उसी का कायाकल्प हो गया। न जाने कितने गुरुदत्त, श्रद्धानन्द, हंसराज, लेखराम आदि जीवनों को उन्होंने सन्त, महात्मा व परोपकारी बना दिया। इतनी प्रेरक, आकर्षक तथा जादुई शक्ति और किसी महापुरुष में नज़र नहीं आती। लोग तलवार लेकर आए, शिष्य बनकर गये। जिसने भी उन्हें देखा, सुना और सम्पर्क में आया, उसी पर उनका जादू चल गया। जिधर से निकले, उधर ढोंग, पाखण्ड, अज्ञान, अन्धविश्वास को मिटाते हुए सत्यधर्म की रोशनी फैलाते गये। वह निर्भीक, ईश्वर विश्वासी, योगी, सन्यासी, संसार में बुराईयों, कुरीतियों, गुरूढ़म, ढोंगी महन्तों, सन्तों आदि के विरूद्ध अकेला चला, लड़ा और विजयी हुआ।

ऐसा देवपुरुष इतिहास में न मिलेगा, जिसने अपना सर्वस्व मानवता के कल्याण, उत्थान तथा मंगल में लगा दिया हो। अपने लिये न कभी कुछ चाहा, न माँगा और न संग्रह किया। जीवन भर ज़हर पीया, पत्थर खाये, अपमान सहा, बदले में अमृत लुटाता रहा। संसार के महापुरुषों में किसी न किसी प्रकार का कोई न कोई दोष रहा है। पवित्रात्मा ऋषि दयानन्द के जीवन में आदि से अन्त तक किसी प्रकार की संसारिक त्रुटि, दोष तथा दुर्बलता न थी। हीरे के समान उनका जीवन सभी ओर से चमकता था। उन्होंने लोभ और भय को जीता हुआ था।

प्रसिद्ध एकलिङ्ग की गद्दी को ठुकराने में उन्हें एक क्षण भी नहीं लगा। राजा ने कहा-स्वामिन् ! सोच लो, इतनी धनसम्पदा की गद्दी देने वाला तुम्हें कोई न मिलेगा। स्वामी जी ने एक क्षण भी नहीं लगाया और बोले-राजन् ! तुम भी सोच लेना, इतनी धन-वैभव की गद्दी को ठुकराने वाला तुम्हें कोई और फकीर भी न मिला होगा। यह उनके स्वभाव का प्रेरक उदाहरण है। वे चाहते तो अपार सुख-वैभव साधनों में जीवन गुजार सकते थे। मगर उस महायोगी ने जीवन भर अपने लिये कुछ चाहा ही नहीं। संसारिक सुख-भोग, सम्पदा आदि उनके लिए तुच्छ थी।

जर्मन विद्वान् मैक्समूलर से किसी ने पूछा-आप उन्नीसवीं शताब्दी की सब से बड़ी उपलब्धि, चमत्कार तथा उल्लेखनीय घटना क्या मानते है ? उन्होंने कहा-मैं इस शताब्दी का सबसे बड़ा चमत्कार व महत्त्वपूर्ण उपलब्धि यह मानता हूँ-ऋषि दयानन्द का संसार के सामने वेदों का यथार्थ स्वरूप प्रस्तुत कर देना। वेदों का आम जनता से सम्बन्ध जोड़ देना। वेदों को पढ़ना-पढ़ाना सभी को अधिकार है, हम मान्यता को स्थापित घटना जिसे महाभारत के पश्चात् अन्य कोई नहीं दे सका। यह निर्विवाद सच है कि ऋषि दयानन्द ने वेदोद्धार किया है। उन्होंने संसार को संदेश दिया है कि वेदों की ओर लौटो। मेरा नहीं 'वेदो' की मानो।

वेद ज्ञान परमेश्वर का आदेश, उपदेश तथा संदेश है। वेद सबके लिये और उसे सबको पढ़ने का अधिकार है। वेद ज्ञान ही आज के जीवन और जगत् को विश्वशान्ति, विश्वबन्धुत्व एवं मानवता की शिक्षा तथा प्रेरणा दे सकता है। ''वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है''-इस सत्य को स्थापित करने के कारण ऋषि सदा अमर रहेंगे। स्वामी जी ने संसार को वेदज्ञान के बारे में वैज्ञानिक सोच व दृष्टि दी। यह अपने में महान् योगदान है। वेदों के बारे में तरह-तरह की फैली भ्रान्तियों का तर्क, प्रमाण और वैज्ञानिक अर्थ देकर उत्तर दिया। ऋषि ने स्पष्ट किया-भूत, प्रेत, फलित ज्योतिष, ग्रह-नक्षत्रों का प्रभाव पशु बलि, मांस-मदिरा का सेवन आदि कल्पित बातों का वेदों से कोई सम्बन्ध नहीं है। बाद में मध्यकाल में इन मिथ्या बातों की वेदों में मिलावट की गई।

संसार के ऊपर ऋषि दयानन्द के प्रत्येक क्षेत्र में अनन्त उपकार है। कोई ऐसा क्षेत्र नहीं है, जिस पर उन्होंने सत्य, यथार्थ, प्रेरक और व्यवहारिक प्रकाश न डाला हो। स्वयं गृहस्थी न होते हुए भी उन्होंने संसार को मानव-निर्माण की कुंजी ''संस्कार-विधि'' दी। संस्कारों से ही आचार-विचार एवं जीवन का निर्माण होता है। आज मानव समाज में तेजी से संस्कार हीनता फैल रही है। इसी कारण सच्चे अर्थ में मानव-मानव नहीं बन पा रहा है। जब तक मानवीय गुणों से युक्त मनुष्य नहीं बनेगा, तब तक धरती पर सुख-शान्ति, प्रसन्नता, सन्तोष, भाईचारा आदि नहीं बनेगा।

महर्षि दयानन्द जन्म स्थान टंकारा में बोधोत्सव का आयोजन

आर्य जनों को यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता होगी कि प्रतिवर्ष की भांति आगामी वर्ष में महर्षि दयानन्द जन्म स्थान टंकारा में शिवरात्रि के पावन पर्व पर भव्य ऋषि बोधोत्सव का आयोजन सोमवार, मंगलवार, बुधवार 16, 17, 18 फरवरी 2015 को किया जायेगा। आपसे निवेदन है कि आप यह तिथियाँ अभी से अंकित कर लेवें और इन तिथियों में अपनी आर्य समाज एवं अपनी संस्था का कोई कार्यक्रम न रखकर उक्त समारोह में अधिक से अधिक आर्य जनों के साथ टंकारा पधारने का कार्यक्रम बनायें। आपके आवास एवं भोजन की व्यवस्था टंकारा ट्रस्ट की ओर से होगी।

thearyasamaj.org

सब मंत्रिजन की इच्छा तक ही

-ले० डॉ० अशोक आर्य 104 शिप्रा अपार्टमैंट कौशाम्बी

राजा हो, मंत्री या प्रधान मंत्री, यह सब अपने पद पर तब तक ही कार्य कर सकते हैं, जब तक जनता इन्हें पसंद करती है। ज्यों ही जनता अपनी आँख फेरती है त्यों ही यह सब पदच्युत कर दिए जाते हैं। इसलिए राजा आदि को चाहिए कि वह अपने कर्त्तव्यों का सदा पालन करें और अच्छी प्रकार से पालन करें। इस तथ्य का ऋग्वेद के अध्याय १०.१७३.२ में इस प्रकार उपदेश कर रहा है-

इहेवेधि मापम च्योहाः पर्वत इवाविचाचली।

इन्द्रं इवेह ध्रुवस्तिशठह राष्ट्रं धारय।। ऋग्वेद १०.१८३.२।।

मन्त्र उपदेश करते हुए हमें बता रहा है कि

हे राजन ! तेरे देश की जनता ने तुझे इस सर्वोच्च पद पर, राजा के पद पर, मंत्री के, प्रधानमंत्री पद पर चुन कर आसीन किया है। इस लिए तेरे लिए यह आवश्यक है कि तू जन मानस के हित के साधन अपना। देश के जन मानस को ऊंचा उठाने का यत्न कर, उनके हित के कार्य कर। तेरा अस्तित्व तब तक ही है, जब तक तू जन-जन के हित के कार्य करेगा। इसलिए उठ, खड़ा हो और अपने कर्त्तव्य को पूर्ण करने के कार्य में लग।

हम चाहते हैं कि तू इस पद पर लम्बे समय तक प्रतिष्ठित रह। जिस प्रकार पर्वत कभी अपने स्थान से हटता नहीं, उस पर्वत के ही समान तू भी अपने पद पर स्थिर रह, किन्तु यह स्थिरता तब ही संभव है, जब तक तू अपने कर्तव्य पथ पर स्थिर है। अपने कर्तव्य के मार्ग से हटते ही तेरा यह पद भी लड़खड़ा जावेगा। फिर यह तेरा पद स्थिर रहने वाला नहीं है। यह पद तब तक ही स्थिर है, जब तक तू अपने कर्तव्य मार्ग पर चल रहा है। तू तब तक ही इस पद पर रह सकता है, जब तक तू जन सेवा के कार्यों में लगा है। इसलिए तू ऐसा पुरुषार्थ कर कि जनता को ऊंचा उठाने के कार्यों में, जनता की उन्नति के उपायों में, जनता की प्रगति के कार्यों में कभी कोई बाधा न आवे। जनता की उन्नति में ही तेरा यह पद सुरक्षित है, जनता की उन्नति के उपायों में, जनता की प्रगति के कार्यों में कभी कोई बाधा न आवे। जनता की उन्नति में ही तेरा यह पद सुरक्षित है, जनता की उन्नति में ही तू इस पद पर रह सकता है तथा जनता ने तुझे चुना भी इसलिए ही है।

जिस प्रकार सूर्य दिन भर चमकते हुए अपने प्रकाश से सब को प्रकाशित करता है। उस प्रकार ही तू भी ऐसे उपाय कर, ऐसे जन कल्याण के कार्य कर कि तेरी ख्याति जन-जन के हृदय में अपना स्थान बना ले। तू जन-जन के हृदयों में अपना स्थायी निवास बना सके। जनता सदा तेरे गुणों का गान करती रहे। कवि लोग तेरी प्रशस्ति में गीत बनावें। लेखक लोग तेरे कार्यों की प्रशंसा करते हुए लम्बे-लम्बे लेख लिखे। तेरी कीर्ति पताका का वर्णन तेरे जीवन चरित में प्रमुखता से किया जावे। सर्वत्र तेरी प्रशंसा हो, सर्वत्र तेरे नाम की चर्चा हो। बड़े धैर्य से सब काम कर। ऐसा करते हुए तू अपने इस पद पर स्थिर रहते हुए न केवल जनता की सेवा कर बल्कि अपने देश को, अपने राष्ट्र को आगे ले जाने के उपाय कर, निरंतर देश की उन्नति के लिए कार्य कर। अपने प्रयास में सदा लगा रह, तुझे निश्चय ही सफलता मिलेगी।

इस बात को, इस तथ्य को तू सदा याद रख कि तू इस पद पर तब तक ही सुशोभित है, जब तक जनता का आशीर्वाद तुझे प्राप्त है। ज्यों ही तेरे देश की जनता तेरे से विमुख हो जावेगी, त्यों ही तेरा यह स्थान डगमगा जावेगा, जनता तुझे पदच्युत कर देगी। इसलिए अपने कर्तव्य को समझ और इन्हें पूर्ण करने के प्रयास में लगातार लगा रह। तेरे लिए यह ही तेरा कर्तव्य है, यह ही तेरा कार्य है। इस कार्य में सफलता ही तेरा यशोगान है, इस कार्य में सफलता पर ही तेरा यह पद स्थिर है तथा इस कार्य के सफल होने पर ही तेरी ख्याति जन-जन को हर्षित करेगी, जन-जन के हृदयों में तेरा स्थान बनावेगी।

राजा को यह जान लेना चाहिये कि उस का स्थान जनता की प्रसन्नता पर ही निर्भर करता है। इसलिए जनता को प्रसन्न करना ही राजा का दायित्व होता है। प्रजा को प्रसन्न करने के लिए प्रजा की सुख, सुविधाओं को बढ़ाना ही राजा का मुख्य कार्य होता है। प्रजा की सुख सुविधाओं को बढ़ाना ही राजा का मुख्य कार्य होता है। इसलिए तू प्रजा की भलाई के लिए अच्छी सड़कें बना। उनके घरों को प्रकाशित करने के लिए प्रकाश की उत्तम व्यवस्था कर, उन के आवागमन के लिए याता-यात के उत्तम साधनों की व्यवस्था कर। रेल, बस व वायुयान के साधनों का विस्तार कर, जलमार्ग से यात्रा के लिए जहाज़ों की भी व्यवस्था कर। जनता को रोटी, कपड़ा, मकान भी समय पर समुचित प्रकार से मिल सके, इसकी व्यवस्था भी तेरे ही कंधों पर है। लोगों के आमोद प्रमोद, व्यापार, शिक्षा आदि सब प्रकार की सुविधाए देना भी तेरा ही कार्य है। इस सब के लिए चाहे तू देश के अन्दर के साधनों का ही प्रयोग कर या फिर विदेश से सहायता कर, संधि कर, किन्तु यह सब तुझे ही करना है। जितना इस कार्य में सफलता प्राप्त करेगा, उतना ही जनता तुझे पसंद करेगी तथा जनता की प्रसन्नता तक ही तू इस पद पर है। जनता की दया तक ही यह पद तेरे पास है। इसलिए अपने कर्तव्यों को भली प्रकार कर अन्यथा यह जनता तेरे से विमुख हो जावेगी।

इसलिए तू सदा ऐसे उपाय कर कि जनता का आशीर्वाद तेरे लिए बना रहे। जनता तेरे कार्यों से सदा प्रसन्न रहे। जनता तेरे कार्यों से इतनी प्रसन्न हो कि कभी भी तुझे इस पद से हटाने की सोचे भी नहीं। जब कभी तू स्वयं इस पद को त्यागने की इच्छा प्रकट करे तो जनता दौड़ते हुए तेरे पास आवे तथा तुझे इस पद पर बने रहने की प्रार्थना करे, तुझे कभी यह पद न छोड़ने दे।

धार्मिक परीक्षा का आयोजन

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब तथा आर्य समाज बरनाला के निर्देशानुसार गांधी आर्य हाई स्कूल बरनाला में नैतिक शिक्षा एवं धार्मिक परीक्षा का आयोजन किया गया। स्कूल प्रांगण में लगातार कई दिनों के अभ्यास उपरान्त परीक्षा रखी गई जिसमें प्रार्थना मंत्र अर्थ सहित, गायत्री मंत्र अर्थ सहित, आर्य समाज के नियम, शांतिपाठ के अतिरिक्त वेद व आर्य समाज के प्रति प्रश्न पूछे गए।

परीक्षा में आठ विद्यार्थी प्रथम, ग्यारह विद्यार्थी द्वितीय, तथा चौबीस विद्यार्थी तृतीय स्थान पर रहे। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के कार्यकारिणी सदस्य भारत भूषण मैनन, आर्य समाज के प्रधान डा० सूर्य क्रान्त शोरी स्कूल प्रधान प्रेम कुमार बांसल, मैंनेजर संजीव शोरी तथा महासचिव भारत मोदी द्वारा विद्यार्थियों को बधाई देकर विशेष प्रोगाम में प्रमाणपत्र एवं परितोषिक देने की घोषणा की। परीक्षा इंचार्ज रणजीत शास्त्री, राम चन्द्र आर्य, श्रीमती रीटा रानी ने विद्यार्थियों को कई दिन इस परीक्षा हेतु तैयारी करवाई तथा परीक्षा ली। स्कूल प्रमुख राम कुमार सोबती ने बताया कि संस्था में प्रति शनिवार विद्यार्थियों में आर्य विचार भरने हेतु यज्ञ किया जाता है जिसमें पूरी रूचि से वे भाग लेते हैं। अब बीस दिन बाद लड़कों के विभाग में भी परीक्षा ली जाएगी।

-रामकुमार सोबती प्रिंसीपल

thearyasamaj.org

विचारों की उथल-पुथल के मध्य क्षणिक मौन

-रमेश चन्द्र पहूजा, यमुनानगर

किसी एक समय, हमारे मन में केवल एक ही विचार होता है। हमारा अगला विचार क्या होगा, कोई नहीं जानता। परन्तु जब भी अगला विचार आता है उसका पिछले विचार से कोई न कोई सम्बन्ध अवश्य होता है। इस सम्बन्ध में कोई तर्क हो सकता है और नहीं भी। यह सम्बन्ध सीधा-सीधा भी हो सकता है अन्यथा भी। यह एक शब्द, लय (rhyme), एक घटना, एक दृश्य, पूर्व जन्मों के संस्कार आदि के रूप में हो सकता है। परन्तु यह तो सत्य है कि किसी भी एक समय हमारे मन में केवल और केवल एक ही विचार उत्पन्न होता है।

मन्त्र-साधना के द्वारा हम मन में उठने वाले विचारों की उथल-पुथल को रोक सकते हैं, उन्हें एक दिशा दे सकते हैं। जप क्या है? यह है एक ही शब्द या मन्त्र/श्लोक का बार-बार दोहराना। प्रायः हमें यह ज्ञात नहीं होता कि हमारा अगला विचार क्या होगा परन्तु जब हम जप कर रहे होते हैं तो हमें भली-भाँति मालूम होता है कि हमारा अगला शब्द/विचार क्या होगा। जब हम निश्चय कर लेते हैं कि हम एक शब्द/मन्त्र का लम्बे समय के लिए जाप करेंगें तब हमें एक कला मिल जाती है, technique मिल जाता है अपने मन को केन्द्रित करने का, अनुशासित करने का। अपने मन को दिशा देना या अनुशासित करना जप-विधि की एक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है। Mental discipline is one important achievement of 'Japa' as a technique. जप के द्वारा हम आकस्मिक विचारों से सुरक्षित हो जानने हैं, हमें अपने स्वरूप को जाने का एक मार्ग मिल जाता है, एक अवसर मिल जाता है।

यद्यपि मन में एक के बाद एक विचार उठते रहते हैं तथापि क्रमबद्ध दो विचारों के मध्य में एक अवकाश होता है जो हमें अपने स्वरूप से परिचित कराता है और वह परिचय है कि हम विचार नहीं अपितु दो विचारों के मध्य हृद्धद्दृष्ट हैं, मौन हैं, शून्य हैं। इस बिन्दु पर पुनः चिन्तन करते हैं। विचार उत्पन्न होते हैं, समाप्त हो जाते हैं। प्रत्येक विचार के पहले शान्ति हैं, मौन हैं और विचार के उपरान्त भी वही शान्ति। तो फिर मैं क्या हूँ। विचार के पहले भी मैं शान्ति हूँ, मौन हूँ विचार के उपरान्त भी मैं शान्ति हूँ, मौन हूँ। इसलिए विचारों के होते हुए भी, मैं मौन हूँ। यही मेरी प्रकृति है, स्वभाव है, धर्म है। जप के द्वारा ऐसी मानसिक स्थिति उत्पन्न हो जाती है, बाह्य-वृत्ति रूक जाती है। जप की यह दूसरी उपलब्धि है।

एक साधक सतत् अभ्यास के द्वारा इस मौन की अवधि को बढ़ा अर्न्तमुखी हो जाता है, प्रभु का चिन्तन/ध्यान करने लगता है। मौन की अवधि को बढ़ाने का स्तम्भ वृत्ति प्राणायाम् एक सुन्दर और सरल उपाय है। कुछ साधकों का भी यही निष्कर्ष है : चले वाते चलं चित्तं, निश्चले निश्चलं भवेत्।

परन्तु मन तो एक नटखट, चंचल बालक की तरह है। जब बालक को एक नया खिलौना दे दिया जाता है तो वह सब प्रकार की शरारतें छोड़ उसके साथ खेलने में मस्त हो जाता है। कुछ समय के उपरान्त, उस खिलौने से ऊब कर उसे फैंक देता है और फिर शरारतें करने लगता है। यही अवस्था हमारे मन की है। जब हम एक ही शब्द, मन्त्र या भजन की एक पंक्ति का जप करते रहते हैं तो ध्यान बिखरने लगता है और हम यन्त्रवत ही जब करते रहते हैं। मन जप में नहीं रहता। मन को वापिस लाने का एक सरल उपाय है। मन को जाप के लिए नया शब्द/मन्त्र दे देवें। प्रभु के अनन्त गुण-कर्म-स्वभाव हैं। अपनी-अपनी एकाग्रता के अनुसार, अपनी ही सहज भावना से अपने ही शब्दों में किसी एक गुण, कर्म, स्वभाव का अर्थ सहित चिन्तन करें जैसे ओ३म्...ओ३म्...ओ३म्......जब मन भागने लगे तो ओ३म् आनन्दम्, ओ३म् आनन्दम्...पर मन की सुई को टिका दें। इसी प्रकार ओ३म् निराकार...ओ३म् निराकार... ओ३म् सर्वशक्तिमान, ओ३म् सर्वशक्तिमान आदि-आदि। कहाँ तक भागेगा यह मन !

ईश्वर हम पर कृपा करें। हम विवेक, वैराग्य और अभ्यास के द्वारा मोक्ष के पथ पर अग्रसर हों।

ओ३म् आनन्दम्, ओ३म् आनन्दम्।

ओ३म् आनन्दम्, ओ३म् आनन्दम्॥

ईश्वर स्तुति के लाभ

-ले० श्री नरेन्द्र आहूजा विवेक सैक्टर 20 पंचकूला

ईश्वर में आस्था न रखने वाले लोग अवसर यह पूछते हैं कि जब मनुष्य अपने कर्म करने के लिए स्वतंत्र है और वह किसी कार्य को करने, न करने अथवा किसी अन्य प्रकार से करने के लिए स्वतंत्र हैं तो वह ईश्वर की स्तुति क्यों करे। और फिर ईश्वर को न्यायकारी कहा जाता है तो वह न्यायकारी ईश्वर हमारी प्रशंसा, चाटुकारिता या स्तुति का भूखा नहीं है और न ही हमारे स्तुति करने से वह अपनी न्याय व्यवस्था भंग करके स्तुति करने वालों को उनके दुष्कर्मों का दंड ना देकर उनकी स्तुति से प्रभावित होकर क्षमादान देते हुए अच्छी नियति पुरस्कार स्वरूप देगा। अब यदि न्यायकारी ईश्वर स्तुति करने पर भी न्याय व्यवस्था को भंग नहीं करेंगे तो प्रश्न उठता है कि ईश्वर स्तुति के क्या लाभ हैं ?

क्रान्तदर्शी देव दयानन्द ने आर्योद्देश्यरत्नमाला में जहां स्तुति को परिभाषित किया वहीं साथ ही साथ स्तुति के लाभ भी बतला दिये। ईश्वर की स्तुति करना हम मनुष्यों का प्रथम कर्तव्य नैतिक दायित्व बन जाता है। सृष्टिकर्ता परमपिता परमेश्वर ने हम सभी मनुष्यों के उपयोग एवं उपभोग के लिए ही इस समस्त प्रकृति और इसके ऐश्वर्यों की रचना की है और हम मनुष्य अपने पूरे जीवन ईश्वर प्रदत्त ऐश्वर्यों का दोहन करते हैं। हमें प्राण वायु, सूर्य की रोशनी उष्मा, खाने के लिए विविध प्रकार की वनस्पति, धरती माता के गर्भ से निकले खनिज पदार्थ आदि हर वस्तु परमपिता परमेश्वर द्वारा प्रदत्त ही तो है। इस पर भी यदि हम उस सृष्टिकर्ता पालनकर्ता परमपिता की स्तुति नहीं करते तो निश्चित रूप से हम कृतघ्नता दोष के भागी बनेंगे। वैसे भी लौकिक जीवन में यदि गर्मी के मौसम में प्यास लगने पर कोई एक लोटा शीतल जल पिला दे तो हम उसका धन्यवाद अवश्य करते हैं और वहीं दूसरी ओर ईश्वर जिसने हमें जीवन और जीवन में उपयोग की समस्त सामग्री दी उसकी स्तुति करना हम जरूरी नहीं समझते।

ईश्वर की स्तुति करने से अनेकों प्रत्यक्ष लाभ स्पष्ट दिखाई देते हैं। ईश्वर की स्तुति करते समय हम जिन ईश्वरीय गुणों की चर्चा करते हैं उन गुणों की अपने जीवन में ग्राहयता को बढ़ाते हैं। ईश्वरीय गुणों को गाते समय जब हम कहते हैं कि ईश्वर दयालु है तो दया का भाव हमारे जीवन में भी आए ऐसी अपेक्षा रखते हैं और हम भी अपने साथियों सहयोगियों या अपने ऊपर आश्रितों पर दया का भाव दिखायें। हमने ईश्वर को न्यायकारी कहा तो अपने जीवन में अपने पद पर बैठ कर हम भी इस गुण का पालन करें अर्थात किसी भी स्वार्थ की भावना के वशीभूत हम न्याय आचरण को कदापि नहीं त्यागें। ईश्वर स्तुति करते हुए हम भी ईश्वर प्रदत्त वेदज्ञान का स्वाध्याय करते हुए अपने ज्ञान में वृद्धि करने का प्रयास करें। इस प्रकार की ईश्वरीय गुणों की स्तुति सगुण स्तुति कहलाती है। अब यदि हम रोजाना केवल ईश्वरीय गुणों को गा लें लेकिन इन गुणों का समावेश अपने जीवन में ना करें तो हमारी स्थिति उस जड़ टेपरिकार्डर सरीखी हो जायेगी जो केवल बज सकता है। अतः स्तुति करते समय जिन ईश्वरीय गुणों को हम याद करें उनको अपने जीवन में धारण करने का प्रयास पुरूषार्थ भी अवश्य करें।

ईश्वरीय गुणों की स्तुति से हमारी ईश्वर के प्रति प्रीति बढ़ती है। ईश्वर के गुण, कर्म, स्वभाव को जान मान कर हम गुणगान करते हैं और उन्हें अपने जीवन में धारण करने का पुरूषार्थ करते हैं तो निश्चित रूप से हमारी प्रीति उस परमपिता परमेश्वर से बढ़ती है और हम अपने जीवन को ईश्वरीय पारस के संसर्ग से उन्नत कर सकते हैं। ईश्वरीय गुणों के गुणगान से हमारे अंदर निरअभिमानता आती है अर्थात हमारे झूठे अहंकार का भाव समाप्त हो जाता है क्योंकि हम परमपिता परमेश्वर का सर्वश्रेष्ठ जान मान कर समर्पण भाव से स्तुति गान करते हैं। ईश्वर की स्तुति करने से हमारी आत्मा में आद्रता का भाव उत्पन्न होता है जो गुणों की ग्राहयता को बढ़ाता है।

इस प्रकार हमें सदा दैनिक नित्य कर्म के रूप में ईश्वर की स्तुति अवश्य करनी चाहिये।

thearyasamaj.org

वैदिक जीवन पद्धति श्रेष्ठ व सर्वोत्तम

-ले० मनमोहन कुमार आर्य, 196 चुक्खूवाला-2, देहरादून

यह सारा जगत नाना प्रकार के प्राणियों से भरा है। मनुष्य इस जगत का सर्वोत्तम प्राणी है। इसकी पुष्टि में महर्षि व्यास ने लिखा है 'नहि मानुषाच्छ्रेष्ठतरं हि किंचित्।' इसका कारण मनुष्य के पास बुद्धि तत्व अन्य प्राणियों से सर्वोत्तम रूप में है। यह बुद्धि ज्ञान की प्राप्ति, उसके संरक्षण व उसके उपयोग में काम आती है। यदि किसी के पास बुद्धि न हो तो वह मनुष्य, मनुष्य होकर भी बुद्धिहीन होगा और उसका जीवन निर्वाह स्वावलम्बी न होकर दूसरों पर आश्रित होगा। जिस व्यक्ति के पास जितना अच्छा स्वास्थ्य है और शुद्ध, पवित्र व श्रेष्ठ बुद्धि है, उसका समाज में उतना ही ऊंचा स्थान है। उसका मान-सम्मान है व उसके पास धन-दौलत एवं सभी आवश्यक साधन हैं। बुद्धि ईश्वर से प्राप्त होती है। अध्ययन-अध्यापन, स्वाध्याय, ऊहापोह व ध्यान-चिन्तन से इसे विकसित कर साधारण स्थिति से मेधा व प्रज्ञावान बुद्धि की स्थिति तक ले जाया जा सकता है। महर्षि दयानन्द का महत्व इसी कारण है कि उनके पास वह बुद्धि थी जिसमें वेद, वैदिक साहित्य व इतर साहित्य तथा संसार संबंधी विषयों का अधिकतम् सत्य ज्ञान था। इसके साथ ही उनका स्वास्थ्य भी प्रशंसनीय था तथा उन्होंने अपने ज्ञान व बुद्धि का भरपूर सदुपयोग कर वेदों का पुनरूद्धार किया और विश्व में वैदिक धर्म व संस्कृति का सिंहनाद व प्रचार किया।

सामान्य जीवनयापन के लिए मनुष्य का स्वस्थ होना व परिपक्व बुद्धि का होना आवश्यक है। मनुष्य की एक विशेषता देखी जाती है कि यह संसार में सीख-सीख कर ही ज्ञानी बनता है। ज्ञान इसे स्वत: प्राप्त होता अपितु यह विद्यालयीय गुरूओं व आचार्यों, ज्ञान-विज्ञान-अध्यात्म विषयक साहित्य व लोगों की संगति में आता है, वैसा ही ज्ञान उसे प्राप्त होता है। हिन्दी भाषी माता-पिता से उत्पन्न बालक हिन्दी बोलता है, अंग्रेजी माता-पिता से उत्पन्न शिशु या बालक अंग्रेजी और इसी प्रकार अन्य-अन्य माता-पिताओं से उत्पन्न बालक अपने माता-पिता की भाषायें बोलते हैं। इसी प्रकार जो व्यक्ति जिस प्रकार के समाज में रहता है उसकी जीवन शैली भी उसके अनुरूप ही होती है। वह उसी समाज में व्यवहृत भोजन करता है, वैसे ही वस्त्र पहनता है, उसी प्रकार की उसकी सोच होती है। सम्प्रति विश्व में नाना प्रकार की जीवन पद्धतियां देखी जाती हैं जिनमें से एक है वैदिक जीवन पद्धति जो अपने आप में सम्पूर्ण जीवन शैली है। इसका आधार वेद एवं वैदिक साहित्य है। इसके लिए हमें प्राचीन आर्य ऋषि-मुनियों की शिक्षाओं व उनकी परम्परा के ग्रन्थों वेद, उपनिषद्, दर्शन, रामायण एवं महाभारत आदि को जानना होता है। इसे जानकर हमें वैदिक जीवन जीने व उसके सभी पहलुओं का ज्ञान होता है।

वैदिक जीवन का आधार वेद की शिक्षायें है। वेद ईश्वर, जीवात्मा व प्रकृति को अनादि तत्व मानता है। इन तीन में से एक अनादि तत्व प्रकृति है जो कि जड़ है और इसी जड़ प्रकृति तत्व से ईश्वर ने जीवात्माओं के शुभ-अशुभ व पुण्य-पाप कर्मो के फलों के भोग के लिए इस सृष्टि की रचना की है। इस सृष्टि का पालन भी ईश्वर ही कर रहा है। यदि वह इसे धारण व इसका पोषण न करे तो यह सृष्टि विद्यमान नहीं रह सकती। इससे पूर्व की हम आगे बढ़े यहां रूक कर ईश्वर, जीव व प्रकृति के स्वरूप पर भी एक दृष्टि डाल लेते हैं। ईश्वर सत्य, चित्त, आनन्दस्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनादि, अनन्त, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तरयामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र व सृष्टिकर्ता है। वहीं एकमात्र जगत्स्रष्टा देव सारे संसार के लोगों के लिए उपासनीय है, उसके स्थान पर अन्य नहीं। ईश्वर के अतिरिक्त माता, पिता, आचार्य, विद्वान अतिथि व सज्जन व परोपकारी मनुष्य भी उपासनीय हैं जिनसे संवाद व सहयोग कर हम परस्पर हित-चिन्तन कर सकते हैं। जीवात्मा सत्य, चित्त, आनन्दरहित एवं आनन्द की प्राप्ति हेतु प्रयत्नशील, अल्प परिमाण, एकदेशी, आकार रहित, सूक्ष्म, ज्ञान अर्जित व कर्म करने में प्रयत्नशील, कर्म फल में बंधा हुआ एक शाश्वत् तत्व है जो जीवों की दृष्टि में संख्या में अनन्त हैं। ईश्वर की प्रेरणा से ही कर्मानुसार फल भोग हेतु ही यह जन्म लेता है और सुख-दु:ख रूपी फलों को भोगता है। योगाभ्यास द्वारा व वेदों के ज्ञान से सम्पन्न होकर यह आत्मा व परमात्मा का साक्षात्कार कर जीवन मुक्त हो सकता है और उसके बाद मोक्ष प्राप्त कर सकता है। संसार के अनित्य होने व बार-बार बनने व बिगड़ने के कारण यह अब तक प्राय: सभी योनियों में असंख्य-असंख्य बार जन्म ले चुका है और अन्त बार ही इसकी मुक्ति भी हो चुकी है। (क्रमश:)

शोक समाचार

बृहस्पतिवार दिनांक 24 जुलाई 2014 को दोपहर में हृदय रोग से पीड़ित आर्य समाज मोगा के एक समर्पित आर्य समाजी परिवार के सदस्य श्री अमृत लाल जी अग्रवाल का निधन हो गया। 14 दिन अस्पताल के इलाज से एक सप्ताह पूर्व रविवार को वह आर्य समाज मोगा में हवन यज्ञ करवा कर गये थे। वह सालों-साल नियमित रूप से सर्दी-गर्मी बरसात में दैनिक हवन यज्ञ में सम्मिलित होते रहे। वह आर्य समाज के पुरोहित की अनुपस्थिति में भी पुरोहित का सारा कार्य करते रहे। उनका अन्तिम संस्कार 24 जुलाई को सायं साढ़े 6.00 बजे परिवार जनों व सैंकड़ों आर्य जनों की उपस्थिति में सुयोग्य पुरोहित दिवाकर भारत ने गांधी रोड शमशान घाट में करवाया। परमात्मा उनकी आत्मा को शांति प्रदान करे और शोक संतप्त परिवार को धैर्य धारण करने की शक्ति प्रदान करे।

-प्रियतम देव मोगा

आर्य मर्यादा के ग्राहक महानुभावों की सेवा में

आर्य मर्यादा साप्ताहिक निरन्तर आपकी सेवा में पहुंच रही है। जिन आर्य मर्यादा के ग्राहकों ने अभी तक अपना वार्षिक शुल्क या पिछला शुल्क नहीं भेजा है उनसे विनम्र प्रार्थना है कि वह अपना वार्षिक शुल्क जल्द से जल्द भिजवाने की व्यवस्था करें। आर्य मर्यादा का वार्षिक शुल्क मात्र 100/- रुपये है और आजीवन सदस्यता शुल्क 1000/- रुपये है। इसलिये मेरी सभी ग्राहक महानुभावों से प्रार्थना है कि वह अपना शुल्क जल्द से जल्द भिजवाने की व्यवस्था करें। इसके साथ ही आर्य समाजों के पदाधिकारियों एवं सदस्यों से भी निवेदन है कि वह अधिक से अधिक आर्य मर्यादा के ग्राहक बनाने में सहयोग करें। आशा है आप का सहयोग हमें प्राप्त होगा।

-व्यवस्थापक आर्य मर्यादा

आर्य समाज मुहल्ला गोबिन्दगढ़ जालन्धर का वेद सप्ताह

आर्य समाज मुहल्ला गोबिन्दगढ़ जालन्धर का वेद सप्ताह 10 अगस्त से 17 अगस्त 2014 तक बड़ी धूमधाम और हर्षोल्लास के साथ मनाया जा रहा है। इस अवसर पर 10 अगस्त से 17 अगस्त तक पंडित सुन्दर लाल जी शास्त्री के वेद प्रवचन होंगे और आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के भजनोपदेशक श्री जगत वर्मा जी के मधुर भजन होंगे। सभी धर्मप्रेमी सज्जनों से निवेदन है कि वह इस अवसर पर धर्म लाभ उठावें।

-इन्द्र कुमार शर्मा आर्य समाज, मुहल्ला गोबिन्दगढ जालन्धर

आर्य समाज अड्डा होशियारपुर जालन्धर में वेद प्रचार सप्ताह

आर्य समाज अड्डा होशियारपुर जालन्धर का वेद प्रचार सप्ताह 4 अगस्त से 10 अगस्त 2014 तक बड़ी धूमधाम और हर्षोल्लास के साथ मनाया जा रहा है। इस अवसर पर 4 अगस्त से 10 अगस्त तक आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महोपदेशक श्री पंडित विजय कुमार जी शास्त्री के वेद प्रवचन होंगे तथा श्री राजेश प्रेमी जी के मधुर भजन होंगे। सभी धर्मप्रेमी सज्जनों से निवेदन है कि वह इस अवसर पर पधार कर धर्म लाभ उठावें।

-विनोद सेठ प्रधान आर्य समाज

thearyasamaj.org

वेदवाणी

जीवन के दो मार्ग–भोग और अपवर्ग

ईजानश्चितमारुक्षदग्निं नाकस्य पृष्ठाद् दिवमुत्पतिष्यन्।
तस्मै प्रभाति नभसो ज्योतिषीमान् स्वर्गः पन्थाः सुकृते देवयानः॥
अथर्व० २८।४।३४

विनय-क्या तुम देवत्व पाना चाहते हो ? उस प्रसिद्ध बड़ी महिमा वाले 'देवयान' मार्ग के पथिक बनना चाहते हो ? परन्तु शायद तुम उस देवों के चलने के मार्ग को अभी समझ ही न सकोगे। बात यह है कि संसार में दो मार्ग चल रहे हैं। एक मार्ग से संसार के लोग भोग में, प्रकृति में, प्रवृत्त हो रहे हैं-विश्व के एक से एक ऊँचे सुख भोग पाने के लिए दृढतापूर्वक अग्रसर हो रहे हैं। दूसरे मार्ग वाले लोग भोगों से निवृत्त होकर अपवर्ग की ओर, आत्मा की ओर जा रहे हैं। ये क्रमशः पितृयाण और देवयान हैं। इन दोनों मार्गों द्वारा प्रकृति पुरुष के भोग और अपवर्ग नामक दोनों अर्थों को पूरा कर रही है, परन्तु प्रवृत्ति और निवृत्ति दोनों एक साथ कैसे हो सकती है ? इसलिए जो लोग भोगों में विश्वास रखते हुए मुँह उठाए उधर जा रहे हैं, उन्हें लाख समझाने पर भी वे आत्मा की बात नहीं सुनेंगे। देवयान मार्ग तो उन्हें ही भासता है जो भोगों की निःसारता को अच्छी प्रकार से समझ गये हैं, परम लुभावने बडे-बडे दिव्य भोगों को (जिनका हमें अभी कुछ पता भी नहीं है) देखकर जो उनसे भी ऐसे विरक्त हो चुके हैं कि वे अब संसार के सर्वश्रेष्ठ सुख भोग के इन्द्रासनों को छोड़कर ज्ञानस्वरूप तत्त्व की शरण पाने के लिए व्याकुल हो गये हैं-भोगों में अन्धकार ही अन्धकार पाकर अब वे ज्ञानमय लोक में चढ़ना चाहते हैं। यही मार्ग 'स्वः' को, आत्म-सुख को, आत्म-ज्योति को प्राप्त करने वाला है। यदि तुम में अभी भोगलिप्सा शेष है तो तुम्हें अभी वह जगमगाता हुआ ज्योतिषीमान् मार्ग भी दिखाई नहीं दे सकता। जबकि संसार के लिए आकर्षक और प्रार्थनीय बड़े-बड़े स्वर्गिक भोग और दिव्य विभूतियों के भोग भी आत्महीनता के कारण तुम्हें बिल्कुल बेकार, निःसत्त्व लगेंगे और यह आत्म प्रकाश शून्य भोगदायक लोक अन्धकारमय दिखने लगेगा। तब उसी अँधेरे के बीच में सुवर्ण रेखा की भांति और फिर विद्युत लता की भांति अन्त में चकाचौंध करने वाली, अनन्त सूर्यों के प्रकाश को भी मात करने वाली ज्योति की भांति यह देवयान का दिव्य-प्रकाश तुम्हारे लिए उत्तरोत्तर बढ़ता जाएगा। तब भोगवादियों के लाख समझाने पर भी तुम्हें इन भोगों में राग पैदा नहीं होगा।

साभार-वैदिक विनय, प्रस्तुति-रणजीत आर्य

आर्य समाज वेद मन्दिर भार्गव नगर जालन्धर का जनसम्पर्क अभियान

आर्य समाज वेद मन्दिर भार्गव नगर जालन्धर की ओर से जन सम्पर्क अभियान के दौरान, नशों के खिलाफ भार्गव नगर के हर एक चौंक में सायं सन्ध्या का कार्यक्रम 6 बजे से 7-15 तक बड़ी धूमधाम से किया जा रहा है। जिसका लोगों द्वारा बहुत स्वागत व सहयोग किया जा रहा है। आर्य समाज मन्दिर की ओर से आने वाले 6 महीनों के लिए कार्यक्रम नोट कर लिए गए हैं। इससे आर्य समाज का प्रचार प्रसार बढ़ेगा और लोगों को नशों व धर्म परिवर्तन के विरुद्ध जागरूक किया जाएगा। बर्बाद हो रही पंजाब की जवानी को बचाने के लिए प्रयास किया जाएगा।

सुदेश कुमार मन्त्री आर्य समाज

गुरुकुल का आयुर्वेद महान
घर-घर में मिले रोगों से निदान

100 गुरुकुल शताब्दी

गुरुकुल च्यवनप्राश
सभी के लिए स्वादिष्ट, रुचिकर, पौष्टिक रसायन।

गुरुकुल पायोकिल
पायोरिया की आयुर्वेदिक औषधि दांतों में खून रोके, मुंह की दुर्गन्ध दूर करे, मसूड़ों के रोग, ढीले दांत ठीक करे।

गुरुकुल शतशिलाजीत सूर्यतापी
पुष्टीदायक, बलवर्धक
शरीर में नया खून और उत्साह का अनुभव

गुरुकुल ब्राह्मी रसायन
बुद्धिवर्धक, स्फूर्तिदायक, दिमागी कमजोरी दूर करे।

गुरुकुल मधुमेह नाशिनी गुटिका
मधुमेह एवं प्रत्येक प्रकार के प्रमेह में लाभदायक

गुरुकुल मधु
गुणवत्ता एवं ताज़गी के लिए

गुरुकुल चाय
खाँसी, जुकाम, इन्फ्लूएंजा व थकान में अत्यंत उपयोगी।

अन्य प्रमुख उत्पाद
गुरुकुल द्राक्षारिष्ठ
गुरुकुल रक्तशोधक
गुरुकुल अश्वगंधारिष्ट

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी, हरिद्वार डाकघर : गुरुकुल कांगड़ी-249404, ज़िला-हरिद्वार (उत्तरांचल) फोन : 0134-416073

शाखा कार्यालय : 63, गली राजा केदार नाथ, चावड़ी बाज़ार, दिल्ली-6, फोन : 23261871

श्री प्रेम भारद्वाज महामन्त्री, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा आर. के. प्रिंटर्स प्रैस, टाण्डा फाटक जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। E-mail: apspunjab2010@gmail.com
आर्य मर्यादा में प्रकाशित सारी लेखन सामग्री से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्याय क्षेत्र जालन्धर होगा।